International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-06-2021, Accepted: 03-07-2021, Published: 18-07-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 29-31

संत कबीर और संत मगनीराम के राम में वैषम्य

शतदल मंजरी
शोध छात्रा, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश
भक्तिकाल के कवियों ने ईश्वर के दो रुपों की उपासना की है। कबीर ने जहाँ निर्गुण ब्रह्म को अपना आराध्य बनाया वहीं रीतिकालीन संत मगनीराम ने अपनी साखियों में कबीर परंपरा एवं आदर्श को संजोए रखने के बावजूद सगुणरुप को अपनी भक्ति का आधार बनाया है। 'राम ' का नाम कबीर ने भी लिया और मगनीराम ने भी लिया, किंतु कबीर के राम और मगनीराम के राम में अंतर है। कबीर ने निर्गुण, निराकार, अजन्मा, अरूप, अलख ब्रह्म को ही 'राम' के नाम से संबोधित किया है, जबकि मगनीराम के राम विष्णु के अवतार हैं :
राम अयोध्या कृष्ण है मथुरा बिस्नु प्रयाग।
कासी मगनीराम हर सुमिरत दुविधा भाग।। (१)
कबीर अवतार वाद में विश्वास नहीं करते। कबीर के राम तो घट-घट बासी, सूक्ष्म तत्त्व हैं। वे 'राम' नाम के जप पर विशेष बल देते हैं।
कबीर के राम दशरथ पुत्र नहीं हैं। वे बार-बार यह कहते हैं कि:
दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।। (२)
कबीर की भाँति मगनीराम भी राम-नाम के गायक और नामोपासक भक्त हैं। इन्होंने भी राम-नाम महिमा को अपने काव्य में सर्वाधिक महत्त्व दिया है। वे सतत् नाम जप को महत्त्व देते हैं:
राम कहि बैठिये उठिये कहि के राम।
चलिए हरि-हरि-हरि जपत मगनीराम प्रणाम।। (३)
ईश्वर के जितने भी नाम हैं उनमें संत कवि द्वय को राम नाम अधिक प्रिय है। नाम स्मरण की महत्ता उनके काव्य में सर्वाधिक मिली है।

मूल शब्दः कबीर, मगनीराम, ब्रह्म, सगुण, निर्गुण, राम।

प्रस्तावना
कबीर के राम अनादि, अनन्त हैं, त्रिगुणातीत हैं, सत्य स्वरुप हैं। वे न जन्म लेते हैं, न मृत्यु को प्राप्त होते हैं। वे अविनाशी एवं पूर्ण हैं। योगी उन्हें योग से पाते हैं तो भक्त उन्हें भक्ति से प्राप्त करते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि कबीर के राम एक ओर तो सगुण राम (दशरथ सुत) से भिन्न हैं तो दूसरी ओर शंकराचार्य के निर्गुण ब्रह्म से भी अलग हैं, क्योंकि वे ज्ञान के नहीं भक्ति के विषय हैं। जीवात्मा प्रियतम राम के प्रति अनुरक्त होकर ऐसी पागल हो गई है कि उसे लोक-लाज का भी भय नहीं है:

मैं बौरी मेरे राम भरतार।
ता कारनि रचि करौं सिंगार।।(४)

अपने प्रिय से मिलने के लिए कबीर की आत्मा रुपी सुन्दरी श्रृंगार करती है। वह अपने को राम की बहुरिया मानती है:

"हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया।"
राम बड़े मैं छुटक लहुरिया।।
किया स्यंगार मिलन के तांई।
काहे न मिलौ मेरे राम गुसांई।।(५)

कबीर के राम के अनन्त नाम हैं। वे अल्लाह, करीम, खुदा, रहीम, गोविंद, हरि, माधव, किसी भी नाम से पुकारे जा सकते हैं।
कबीर भले ही निर्गुणोपासक संत कवि कहे जाते हैं, किंतु उनमें भक्ति तत्त्व की प्रधानता है। वह भक्ति जो

सगुण-साकार रूप से संवद्ध होती है, उसे निर्गुण निराकार ब्रह्म के प्रति उतनी ही तीव्रता से व्यंजित कर कबीर ने निर्गुण भक्ति का एक आदर्श प्रस्तुत किया है। वे स्वीकार करते हैं कि:

जब लगि भाव भगति नहिं करिहौं।
तब लगि भवसागर क्यू तरिहौं।।(६)

मगनीराम सगुण भक्ति धारा के भक्त कवि हैं। मगनीराम के 'राम' सगुण साकार हैं। वे विष्णु के अवतार हैं तथा उन्होंने दशरथ एवं कौशल्या के पुत्र रुप में अवतार ग्रहण किया है। मगनीराम के राम मूल रूप में निर्गुण ब्रह्म है जो सगुण रूप में व्यक्त हुए हैं। एक ओर यदि अद्वैत, अव्यक्त, अविरल, अनामय एवं अमल तो दूसरी ओर दीनबन्धु, दयालु, भक्त वत्सल, शरणागत वत्सल हैं:

राम चरण मों परि रहो किया चहौं जो काम।
सरनागत पालक प्रभु बानक मगनीराम।। (७)

मगनीराम के 'राम' शक्ति, शील एवं सौंदर्य से युक्त हैं। संत मगनीराम द्वारा की गयी राम की स्तुतियों में यह स्पष्ट हो जाता है कि वे विष्णु के अवतार हैं जो धर्म की स्थापना के लिए इस संसार में अवतार लेते हैं:

राम अयोध्या कृष्ण है मथुरा बिस्नु प्रयाग।
काशी मगनीराम हर सुमिरत दुविधा भाग।। (८)

मगनीराम के राम गुणों के भण्डार हैं। मगनीराम रचनावली में उद्धृत साखियों में 'राम' के गुणों की प्रशंसा इन शब्दों में की गई है:

जब अनंत 'राम' जानिया मिटि गा सकल विकार।
मगनीराम सो सहज मो अस्तुति निंदा पार।। (९)

कबीर और मगनीराम दोनों के राम भक्तों की आर्त्त पुकार को सुनकर भक्त का हित करने के लिए सब कुछ करने की सामर्थ्य रखते हैं। कबीर ने 'राम' को जहाँ निर्गुण ब्रह्म माना है वहीं मगनीराम ने निर्गुण ब्रह्म को ही 'राम' के रूप में राम, कृष्ण, विष्णु के रूप में अवतार लिए ते हुए दिखाया है। राम नाम की महत्ता का प्रतिपादन कबीर और मगनीराम दोनों ने किया है। कबीर और मगनीराम दोनों के राम ज्ञान के नहीं 'भक्ति' के विषय हैं।
मगनीराम ने जहाँ समन्वयवादी प्रवृत्ति का परिचय देते हुए निर्गुण और सगुण के समन्वय पर बल दिया और यह प्रतिपादित किया कि

मथत-मथत जब सों मिला सर्गुन दधि धृत नाम।
तब सों कथा न छाछ भ्रम पावै मगनीराम।। (१०)

कबीर के राम निर्गुण हैं जबकि मगनीराम के राम सगुण साकार हैं।
वे जन्म-मृत्यु के बंधन में बंधे हुए हैं। कबीर के राम कर्ता होते हुए भी कर्म बन्धन से मुक्त हैं, किंतु मगनीराम के राम कर्ता हैं और कर्म बंधन में बँधकर जन्म-मृत्यु से बँधे हुए हैं:

"राम सुमिरि अगनित तरे ध्रुव प्रह्लादिक साखि।"(११)

कबीर के राम गुणातीत हैं जबकि मगनीराम के राम में गुण एवं सौंदर्य का समन्वय है। अर्थात्, संत कवि द्वय का राम संपूर्ण संसार में व्याप्त है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संत कबीर और संत मगनीराम दोनों के राम भक्तों के पालनहार हैं। उनके रक्षक एवं पोषक हैं। वे भक्तों पर दया करते हैं, करुणा वत्सल एवं भक्त वत्सल हैं तथा उन्हें भवसागर से मुक्ति दिलाते हैं
भले ही हमें बाह्य दृष्टि से देखने पर कबीर एवं मगनीराम के राम में व्यापक वैषम्य दिखाई पड़ें, किंतु उनमें आंतरिक साम्य है।

संदर्भ

1. मगनीराम रचनावली: डॉ. अवधेश्वर अरुण (संपादक), वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, २००३, पृष्ठ सं०-१३
2. कबीर की काव्य साधना: डॉ. कृष्णदेव शर्मा, अखिलेश प्रकाशन, नवीन सं०. २००४ ई०. २६०७-A, नई सड़क दिल्ली--६, पृष्ठ सं०-११९
3. मगनीराम रचनावली : डॉ. अवधेश्वर अरुण (सं०), वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम सं०.२००३, पृष्ठ सं०-१०
4. कबीर ग्रंथावली : रामकिशोर शर्मा (सं०)' "विरह कौ अंग" लोक भारती प्रकाशन, पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद--२११००१, आठवाँ सं०, २०११, पृष्ठ सं०--१३२
5. वही, पृष्ठ सं०--११७
6. वही, "निहकर्मी प. कौ अंग", पृष्ठ सं०--१७७
7. मगनीराम रचनावली : डॉ. अवधेश्वर अरुण (सं०), वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम सं०, २००३, पृष्ठ सं०--१३
8. वही, पृष्ठ सं०--१४

9. वही, साखी सं०--१३९२, पृष्ठ सं०--१२
10. वही, पृष्ठ सं०--१२
11. वही, पृष्ठ सं०--१३